परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय, इन्दौर

शैक्षणिक सत्र 2020-21

कक्षा - आठ विषय - हिन्दी

वसंत भाग - ३

पाठ12 - सुदामा चरित

मौड्यूल- 1

प्रस्तुतकर्त्री

मंजू देवी, प्र. स्ना. अ.वरि.मान. (हिन्दी / संस्कृत)

सुदामा चरित

नरोत्तम दास
का
जीवन परिचय
एवं रचना

कक्षा 8

पाठ 12

'सुदामा–चरित'

कवि : नरोत्तम दास

जन्म : सन् 1550 में

स्थान : उत्तर–प्रदेश के सीतापुर जिले में।

मृत्यु : सन् 1605

कवि-परिचय
सुदामा चरित- नरोत्तमदास

जीवन इनका जन्म विक्रम सम्वत् 1550 तदनुसार सन् 1493 ईश्वी के लगभग वर्तमान उत्तरप्रदेश के सीतापुर जिले में हुआ और मृत्यु विक्रम सम्वत् 1605 तदनुसार सन् 1548 ईश्वी में हुई। इनकी भाषा ब्रज भाषा है। हिन्दी साहित्य में ऐसे लोग विरले ही हैं जिन्होंने मात्र एक या दो रचनाओं के आधार पर हिन्दी साहित्य में अपना स्थान सुनिश्चित किया है।इनकी रचना बहुत ही सरस और हृदयग्राहिणी है और *कवि* की भावुकता को *परिचय* देती है।

सारांश

नरोत्तम दास जी ने इस रचना को दोहे के रूप में प्रस्तुत किय
है और ऐसा लगता है जैसे दोहा न हो कर श्री कृष्ण और सुदा
की कथा पर आधारित नाटक प्रस्तुत हो रहा है। 'सुदामा चरित
के पदों में नरोत्तम दास जी ने श्री कृष्ण और सुदामा के मिल
सुदामा की दीन अवस्था व कृष्ण की उदारता का वर्णन किया
है। सुदामा जी बहुत दिनों के बाद द्वारिका आए। कृष्ण से
मिलने के लिए कारण था,उनकी पत्नी के द्वारा उन्हें जबरदस्
भेजा जाना। उनकी अपनी कोई इच्छा नहीं थी। बहुत दिनों के
बाद दो मित्रों का मिलना और सुदामा की दीन अवस्था और
कृष्ण की उदारता का वर्णन भी किया गया है। किस तरह से
उन्होंने मित्रता धर्म निभाते हुए सुदामा के लिए उदारता दिखाई
वह सब किया जो एक मित्र को करना चाहिए। साथ ही में
उन्होंने श्री कृष्ण और सुदामा की आपस की नोक-झोक का ब
ही कुशलता से वर्णन किया है। इसमें उन्होंने यह भी दर्शाया है
कि श्री कृष्ण कैसे अपने मित्रता धर्म का पालन बिना सुदामा
के कहे हुए उनके मन की बात जानकर कर देते हैं। मित्र का
यह सबसे प्रथम कर्तव्य रहता है कि वह अपनी मित्र के बिना
कहे उसके मन की बात और उसकी अवस्था को जान ले और
उसके लिए कुछ करें और उदारता दिखाऐं यही उसकी महानता
है।

कविता

सीस पगा न झँगा तन में, प्रभु! जाने को आहि बसे केहि ग्रामा।
धोती फटी-सी लटी दुपटी, अरु पाँय उपानह को नहिं सामा॥
द्वार खड़ो द्विज दुर्बल एक, रह्यो चकिसों बसुधा अभिरामा।
पूछत दीनदयाल को धाम, बतावत आपनो नाम सुदामा॥

शब्द - अर्थ

सीस - सिर पर,
पगा - पगड़ी,
आहि - आया है,
अरु - और,
दुर्बल - कमजोर,
प्रभु - ईश्वर
झगा - कुरता,
केहि - कहाँ,
उपानह - जूते,
चकिसों - चकित,
अभिरामा - सुंदरता
तन - शरीर,
दुपटी - अंग वस्त्र
द्विज - ब्राह्मण
बसुधा - धरती

भावार्थ

इसमें उस प्रसिद्ध प्रसंग का चित्रण हैं जब सुदामा और कृष्ण का मिलना होता है। दोनों बचपन के मित्र हैं। वयस्क होने पर कृष्ण राजा बन जाते हैं लेकिन सुदामा निर्धन ही रहते हैं। अपनी पत्नी के कहने पर सुदामा कुछ मदद की उम्मीद से कृष्ण से मिलने जाते हैं।

कृष्ण का द्वारपाल आकर बताता है कि एक व्यक्ति जिसके सिर पर न तो पगड़ी है, न शरीर पर कुरता है और ना ही जिसके पाँव में जूते हैं, उसने फटी सी धोती पहनी है और बड़ा ही दुर्बल लगता है। वह चकित होकर द्वारका के वैभव को निहार रहा है और आपका पता पूछ रहा है। वह अपना नाम सुदामा बता रहा है।

ऐसे बेहाल बिवाइन सों, पग कंटक जाल लगे पुनि जोए।
हाय! महादुख पायो सखा, तुम आए इतै न कितै दिन खोए॥
देखि सुदामा की दीन दसा, करुना करिकै करुनानिधि रोए।
पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोए॥

शब्द - अर्थ

बेहाल - बुरा हाल
बिवाइन - फटी एड़ियाँ
पग - पैर
कंटक - काँटे
पुनि - बार-बार
जोए - देखने
महादुख - बहुत दुख
इतै - यहाँ
करुना - दया
नैनन - आँखों के

भावार्थ

कृष्ण तुरंत सुदामा को अपने साथ लाने के लिए पहुँच जाते हैं। उनके पैरों की फटी बिवाई और उन पर काँटों के निशान देखकर कृष्ण कहते हैं कि हे मित्र तुमने बहुत कष्ट में दिन बिताए हैं। इतने दिनों में तुम मुझसे मिलने क्यों नहीं आए? सुदामा की खराब हालत देखकर कृष्ण बहुत रोये। कृष्ण इतना रोये कि सुदामा के पैर पखारने के लिए परात में जो पानी था उसे छुआ तक नहीं, और सुदामा के पैर कृष्ण के आँसुओं से ही धुल गये।

कछु भाभी हमको दियो, सो तुम काहे न देत।
चाँपि पोटरी काँख में, रहे कहो केहि हेतु॥
आगे चना गुरुमातु दए ते, लए तुम चाबि हमें नहिं दीने।
स्याम कह्यो मुसकाय सुदामा सों, "चोरी की बान में हौ जू प्रवीने।।
पोटरि काँख में चाँपि रहे तुम, खोलत नाहिं सुधा रस भीने।
पाछिलि बानि अजौ न तजो तुम, तैसई भाभी के तंदुल कीन्हे॥"

शब्द - अर्थ

काहे - क्यों

चाबि - चबा लिए

सुधा - अमृत

तंदुल - चावल

बान - आदत

पाछिलि - पिछली

तजौ - छोड़ी

अजौ - आज तक

तैसई - वैसे ही

भीने - रस भरे

भावार्थ

सुदामा के स्वागत सत्कार के बाद श्रीकृष्ण उनसे कहने लगे कि लगता है भाभी ने मेरे लिये कोई उपहार भेजा है। उसे तुम अपनी बगल में छिपाए हुए क्यों हो, मुझे देते क्यों नहीं? तुम अभी भी अपनी चोरी की हरकतों को नहीं भूले हो। बचपन में जब गुरुमाता ने हमारे लिये चने दिए थे तो सारे चने तुम अकेले ही खा गये थे। उसी तरह से आज भी तुम भाभी के दिये हुए रस भरे चावलों को मुझसे छुपा रहे हो और अकेले ही खाना चाहते हो।

प्रश्न-उत्तर

प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1. सुदामा की दीनदशा देखकर श्रीकृष्ण की क्या मनोदशा हुई? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: सुदामा की दीनदशा को देखकर दुख के कारण श्री कृष्ण की आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। उन्होंने सुदामा के पैरों को धोने के लिए पानी मँगवाया परन्तु उनकी आँखों से इतने आँसू निकले कि उन्हीं आँसुओं से सुदामा के पैर धुल गए।

प्रश्न2. "पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोए।" पंक्ति में वर्णित भाव का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर: प्रस्तुत दोहे में यह कहा गया है कि जब सुदामा दीन-हीन अवस्था में कृष्ण के पास पहुँचे तो कृष्ण उन्हें देखकर व्यथित हो उठे। श्रीकृष्ण ने सुदामा के आगमन पर उनके पैरों को धोने के लिए परात में पानी मँगवाया परन्तु सुदामा की दुर्दशा देखकर श्रीकृष्ण को इतना कष्ट हुआ कि वे स्वयं रो पड़े और उनके आँसुओं से ही सुदामा के पैर धुल गए। अर्थात् परात में लाया गया जल व्यर्थ हो गया।

प्रश्न-उत्तर

प्रश्न3. "चोरी की बान में हौ जू प्रवीने।"

(क) उपर्युक्त पंक्ति कौन, किससे कह रहा है?
(ख) इस कथन की पृष्ठभूमि स्पष्ट कीजिए।
(ग) इस उपालंभ (शिकायत) के पीछे कौन-सी पौराणिक कथा है?

उत्तर: (क) उपर्युक्त पंक्ति श्रीकृष्ण अपने बालसखा सुदामा से कह रहे हैं।

(ख) अपनी पत्नी द्वारा दिए गए चावल संकोचवश सुदामा श्रीकृष्ण को भेंट स्वरूप नहीं दे पा रहे हैं। परन्तु श्रीकृष्ण सुदामा पर दोषारोपण करते हुए इसे चोरी कहते हैं और कहते हैं कि चोरी में तो तुम पहले से ही निपुण हो।

(ग) बचपन में जब कृष्ण और सुदामा साथ-साथ सांदीपन ऋषि के आश्रम में अपनी-अपनी शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। तभी एक बार जब श्रीकृष्ण और सुदामा जंगल में लकड़ियाँ एकत्र करने जा रहे थे तब गुरूमाता ने उन्हें रास्ते में खाने के लिए चने दिए थे। सुदामा श्रीकृष्ण को बिना बताए चोरी से चने खा लिए। श्रीकृष्ण उसी चोरी का उपालंभ सुदामा को दे रहे थे।

इति

धन्यवाद